तृतीय अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सामाजिक यथार्थ"

तृतीय अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सामाजिक यथार्थ''

प्रस्तावना

जिस परिवेश में रचनाकार जीवन बीताता है उस परिवेश का चित्रण रचनाकार अपने साहित्य में करता है। सर्वेश्वरजी का जीवन आर्थिक अभावों में बीत गया है। इस कारण निम्नवर्गीय लोगों की पीड़ा, दर्द, घुटन तथा आर्थिक समस्याओं को उन्होने जीया ही नहीं, तो भोगा भी है। इन्होने अपने लघु-उपन्यासों में पात्रों के आंतरिक घुटन, तृष्णा तथा कुंठा को यथार्थ रूपों में स्पष्ट किया है। इन्होने अपने साहित्य में समाज की प्रचलित वर्ग-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था, पारिवारिक संघर्ष के साथ-साथ रूढ़ि परंपरा, रीति-रिवाज, भेद-भाव, निम्न वर्ग के मजदूरों का तथा दमित वासनाओं का यथार्थ चित्रण किया है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के कथा-साहित्य में प्राप्त सामाजिक यथार्थ के विवेचन-विश्लेषण के पूर्व यह देखना आवश्यक है कि 'यथार्थ' शब्द का क्या अर्थ है ? यथार्थ का स्वरूप क्या है ? तथा सामाजिक यथार्थ की संकल्पना क्या है ? इसका विस्तार के साथ विवेचन-विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत है-

3.1 'यथार्थ' शब्द का अर्थ -

'यथार्थ' अँग्रेजी साहित्य के 'रियलिज्म' शब्द के तौर पर गढ़ा है। यथार्थवाद का मूल सिद्धांत है- वस्तु को उसके मूल रूप में चित्रित करना, न तो उसे कल्पना के द्वारा चित्रित रंगों से चित्रित करना, न तो किसी धार्मिक या नैतिक आदर्शों के लिए काट छाटकर उपस्थित करना।

'यथार्थ' शब्द के अर्थ को विभिन्न शब्दकोशों में इस प्रकार से प्रस्तुत किया है-

'हिंदी शब्द सागर' में 'यथार्थ' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ इस प्रकार है- ''1. ठीक। वाजिब। जैसे- आपका कहना यथार्थ है। 2. जैसा ठीक होना चाहिए, वैसा। ज्यों का त्यों। जैसा का तैसा।''[1]

---

1. सं. श्यामसुंदरदास - हिंदी शब्द सागर, भाग-आठवाँ, पृ. 4058

'राजपाल हिंदी-अँग्रेजी पर्यायवाची कोश' में 'यथार्थ' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है- ''सत्य, वास्तविक, प्रकृत, असल, तथ्यपूर्ण, युक्त, यथातथ्य, संगत, समुपयुक्त।''[1] True, actual, real, right, appropriate इस प्रकार 'यथार्थ' के पर्यायवाची शब्दों को गोपीनाथ श्रीवास्तव ने स्पष्ट किया है। 'भाषा शब्द कोष' में 'यथार्थ' शब्द का अर्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया है- ''वस्तुतः उचित, उपयुक्त, वास्तविक जैसा चाहे वैसा, ठीक-ठीक।''[2] 'हिंदी विश्वकोश' में 'यथार्थ' शब्द का अर्थ इस प्रकार विवेचित है- ''यथारूप, जैसा ठीक होना चाहिए वैसा, जैसा का तैसा। ठीक, वाजिब।''[3] 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में 'यथार्थ' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है- ''1. ठीक। उचित। 2. जैसा है वैसा। 3. सत्य।''[4]

इस प्रकार उपर्युक्त अर्थों को देखने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि यथार्थ याने ज्यों का त्यों, सत्य, यथातथ्य। अतः कहना आवश्यक नहीं कि जो बात जैसी घटित हुई है उसे उसी ढंग से प्रस्तुत करना, अर्थात् ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना यथार्थ है।

3.2 यथार्थ का स्वरूप -

यथार्थ का उद्‌भव पाश्चात्य भूमि पर हुआ है। वहीं पर ही यथार्थ का विकास हुआ है। इस कारण यथार्थवाद पाश्चात्य विचारधारा है।

हिंदी साहित्य में यथार्थवाद समाज की वास्तविकता का चित्रण करता है। इस बारे में डॉ. त्रिभुवन सिंह का कहना है- ''साहित्य में यथार्थवाद जीवन का वह वास्तविक चित्रण है, जो समाज का पूर्ण जीवंत चित्र उपस्थित कर देता है। प्रत्येक युग में वास्तवितकता को ढूँढ़ना ही साहित्य में सच्चा यथार्थवाद है। निष्पक्ष भाव से समाज के संबंधों को ठीक तरह से देखना ही

---

1. सं. गोपीनाथ श्रीवास्तव - राजपाल हिंदी अंग्रेजी पर्यायवाची कोश, पृ. 128
2. सं. डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' - भाषा शब्द कोश, पृ. 1292
3. सं. नगेंद्रनाथ वसु - हिंदी विश्व कोश, पृ. 482
4. सं. डॉ. नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. 1135

यथार्थवाद का कार्य है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि यथार्थवाद समाज की वास्तविकता से संबंध रखता है।

यथार्थवाद साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा है। यथार्थ विस्तृत सत्य है, जिसमें मानव समाज के सभी तत्त्व विद्यमान होते हैं। वास्तव में यथार्थवाद एक जीवन की दृष्टि है। इससे प्रेरित होकर उपन्यासकार अपने उपन्यासों में यथार्थ का चित्रण करता है। यथार्थवादी लेखकों और विद्वानों ने इस दृष्टिकोण के आधार पर यथार्थवाद के कई भेद प्रचलित किए हैं। वे इस प्रकार हैं- ऐतिहासिक यथार्थवाद, सामाजिक यथार्थवाद, प्राकृत यथार्थवाद, समाजवादी यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद तथा राजनीतिक यथार्थवाद आदि। प्रस्तुत अध्याय की सीमाओं को ध्यान में रखकर यथार्थवाद के भेदों का स्पष्टीकरण करने के बजाय 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में चित्रित सामाजिक यथार्थ की संकल्पना तथा सामाजिक यथार्थ के स्वरूप का विवेचन-विश्लेषण करना समुचित होगा।

3.3 सामाजिक यथार्थ से तात्पर्य -

'सामाजिक यथार्थ' को देखने से पहले हमें 'सामाजिक' इस शब्द को जानना आवश्यक होगा। वह इस प्रकार से- 'भाषा शब्द कोष' में 'सामाजिक' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है- ''समाज का। समाज संबंधी। समाज या सभा से संबंध रखनेवाला, सदस्य।''[2] अतः कहना सही होगा कि समाज संबंधी विचारों को 'सामाजिक' कहा जाता है।

अतः 'सामाजिक यथार्थ' के बारे में विविध विद्वानों ने भिन्न-भिन्न विचार प्रस्तुत किए हैं। वे इस प्रकार से हैं- डॉ. त्रिभुवन सिंह ने 'सामाजिक यथार्थ' के बारे में लिखा है- ''सामाजिक यथार्थ का अर्थ है समाज की वास्तविक अवस्था का यथार्थ चित्रण''[3] अतः कहना होगा कि 'सामाजिक यथार्थ' समाज की वास्तविकता से तादात्म्य रखता है।

---

1. डॉ. त्रिभुवन सिंह - हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ. 70
2. सं. रमाशंकर शुक्ल - भाषा शब्द कोश, पृ. 1555
3. डॉ. त्रिभुवन सिंह - हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ. 31

'सामाजिक यथार्थ' के बारे में धीरेंद्र वर्मा का कथन द्रष्टव्य होता है- ''आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों का समुच्चय ही सामाजिक यथार्थ है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि विभिन्न परिस्थितियों से सामाजिक यथार्थ का निर्माण होता है।

सामाजिक यथार्थवादी रचनाकार समाज की साधारण से साधारण घटनाओं को प्रधानता देते हैं। इस कारण यथार्थवादी रचनाकार समाज में स्थित निरर्थक रूढ़ि, परंपराओं, रीति-रिवाजों, भेद-भाव, भ्रष्टाचार तथा वैयक्तिक स्वार्थों से लिप्त समाज की वास्तविकता को साहित्य के द्वारा स्पष्ट करते हैं। इसके साथ-साथ वे जन सामान्य की वेदना, पीड़ा, दुर्बलता तथा दुःख को अपने साहित्य के द्वारा न्याय देने का कार्य करते हैं। इस बारे में सर्वेश्वर जी खरे उतरे हैं।

निष्कर्षतः कहना सही होगा कि यथार्थवाद एक गतिशील पद्धति है। इसमें मनुष्य की धार्मिक तथा नैतिक मान्यताओं का खंडन करके उसका भौतिक परिवेश में यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करना सामाजिक यथार्थ है। इनका लक्ष्य जनसामान्य की दुर्बलताओं तथा वेदनाओं के प्रति ध्यान आकर्षित करना होता है। अतः समाज की विभिन्न स्थितियों को यथारूप में प्रस्तुत करना ही सामाजिक यथार्थ है।

3.4 विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सामाजिक यथार्थ -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना यथार्थवादी रचनाकार है। अपने जीवन-अनुभव के बल पर सर्वेश्वरजी ने सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में किया है। इन्होने समाज में स्थित रीति-रिवाज, अनिष्ठ प्रथा, वर्ग व्यवस्था, समाज व्यवस्था, नये-पुराणे विचार तथा दमित वासनाओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। सामाजिक यथार्थ के विविध पहलु 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में दिखाई देते हैं। वे इस प्रकार हैं-

---

1. सं. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोश, पृ. 914

3.4.1 उच्चवर्गीय समाज का यथार्थ चित्रण -

भारत विभिन्नताओं से भरा देश है, जिसमें कतिपय प्रकार के जन वास करते हैं, किंतु इनमें एक समानता नहीं है। इनमें व्याप्त विभिन्नता के कारणों में प्रमुख आर्थिक संपन्नता एक अहं कारण है। इस आर्थिक परिस्थिति के कारण समाज में उच्च वर्ग, मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग का निर्माण हुआ है। इसमें आर्थिक दृष्टि से प्रबल लोगों को उच्चवर्गीय कहा जाता है।

सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास में सीता के माध्यम से उच्चवर्गीय परिवेश तथा पारिवारिक स्थिति को प्रस्तुत किया है। वह एक मारवाडी सेठ की बेटी होने के कारण इनके रहन-सहन, आचार-विचार तथा वेश-भूषा सामान्य नहीं है। जब सीता स्कूल में पढ़ाई करती है तब इन्हें सभी मास्टरनी से, दोस्तों से आदर मिलता है। इनके बारे में सर्वेश्वरजी लिखते हैं, ''कैसे सीता एक बहुत बड़े इक्के पर बैठकर आती है, जिसमें सफेद गद्दियाँ लगी हुई हैं, और जिसके घोड़े के सिर पर एक बहुत बड़ी कलगी है। कैसे उसके साथ एक नौकरानी आती है जो कई डब्बेवाले चमकदार बरतन में उसके लिए तरह-तरह की मिठाइयाँ लिए बैठी रहती है। कैंसे यह स्कूल सीता के बाप ने बनवाया है। कैसे उसकी सभी मास्टरनी उसे बहुत मानती हैं, उसे डाँटती-झिड़कती नहीं है, बल्कि उसे देखते ही उसकी पीठ पर हाथ फेरकर चिपका लेती है।''[1] अतः कहना सही होगा कि समाज में उच्चवर्गीय लोगों का स्थान किस प्रकार उच्च होता है। इसे यथार्थ रूप में विवेच्य उपन्यास के द्वारा दिखाया है।

'सीता विवाह के उपरांत बहुत दिनों के बाद कमला से मिलती है। इसी दौरान कमला सीता को वैवाहिक जीवन के बारे में पूछती है। उस समय सीता कमला से कहती है, ''वैसे घर पर बहुत आराम है, कोई चिंता नहीं, तमाम नौकर-चाकर हैं। पड़े-पड़े उपन्यास पढ़ती हूँ, रेडियो सुनती हूँ, ज्यादा तबीयत घबड़ाई तो सिनेमा चली जाती हूँ। अपने दो सिनेमा हॉल भी हैं। उनमें, नहीं तो और कहीं।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि उच्चवर्गीय सीता आराम की जिंदगी

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 25
2. वही, पृ. 39

गुजारती है। अतः कहना होगा कि सीता के माध्यम से सर्वेश्वर जी ने उच्चवर्गीय लोगों के रहन-सहन, परिवेश तथा समाज के द्वारा दिया जानेवाला आदर यथार्थ रूप में विवेच्य उपन्यास में स्पष्ट किया है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में सर्वेश्वरजी ने समाज के उच्च वर्ग का चित्रण किया है। इन्होंने रतना के माध्यम से उच्चवर्गीयता को इंगित किया है। रतना एक धनाढ्य परिवार की लड़की है। इस कारण इनमें अहंभाव तथा उच्चवर्गीय विचार दिखाई देते हैं। वह मध्यवर्गीय किशोर से प्यार करती है। इस कारण वह अपने घर से हजार-बारह सौं के जेवर लेकर प्रेमी किशोर के साथ भाग जाती है। जब किशोर उसे अपने भाई के डर से छोड़ना चाहता है तब रतना निराश होकर सहायता के लिए दिनेश के पास जाती है। उस समय रतना दिनेश को पैसों का लालच देकर वापस बाबूजी के पास जाने का निश्चय करती है। इसके बारे में रतना दिनेश को संबोधित करती हुई कहती है, ''दिनेश, तुम मुझे फौरन यहाँ से हटा ले चलो। जितने रुपये कहोगे मैं तुम्हें दे दूँगी।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि उच्चवर्गीय रतना को पैसों का नशा चढ़ा है। वह पैसों के बदले अपने बाबूजी के पास जाना महत्त्वपूर्ण मानती है।

रतना जब किशोर को जेलखाने में कैदी के रूप में देखती है तब उसे गर्व होता है। इस कारण वह किशोर को संबोधित करती हुई कहती है, ''अब बोलो ? मैं चाहूँ तो तुम्हें छुड़ा भी सकती हूँ।''[2] अतः कहना गलत नहीं होगा कि उच्चवर्गीय रतना में निम्नवर्गीय प्रेमी किशोर के प्रति अहं निर्माण होता है।

अतः कहना सही होगा कि विवेच्य उपन्यासों में सर्वेश्वरजी ने उच्चवर्गीयों का निम्न वर्ग के साथ व्यवहार को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। समाज में उच्च वर्ग के लोगों का स्थान, रहन-सहन तथा निम्न वर्ग के प्रति विचारों को स्पष्ट किया है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 28
2. वही, पृ. 43

3.4.2 मध्यवर्गीय समाज का यथार्थ चित्रण -

मध्यवर्ग भारतीय समाज की रीढ़ है। इनकी अवस्था अत्यंत दयनीय है। सर्वेश्वरजी ने मध्यवर्गीय जीवन को सिर्फ देखा ही नहीं तो उसे भोगा भी है। इसके बारे में डॉ. विजय प्रकाश मिश्र की मान्यता है- ''सर्वेश्वरजी मध्यवर्गीय परिवार में पले थे। इसीलिए इस वर्ग की कठिनाइयों, परेशानियों और दुखों से ये परिचित थे। उन्होने इस वर्ग के अहं, रोमांस, महत्त्वकांक्षा, निराशा, आस्था आदि का मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है।''[1] मध्य वर्ग के दो रूप होते हैं- जैसे एक अपने समाज के लिए और दूसरा नये विचारों के पश्चिमी सभ्यता तथा अनुसरण करने के लिए होता है। सर्वाधिक अंतर्विरोध और आकांक्षाओं की पीड़ा दूसरे वर्ग में दृष्टिगोचर होती है। मध्यवर्ग सीमित आय की वजह से अपने बौद्धिक बोध, ऊँचे प्रदर्शन, अतिरिक्त महत्त्वाकांक्षा तथा लालसाओं के कारण मानसिक घूटन, निराशा तथा तृष्णा में रहता है। आर्थिक अभाव के कारण इस वर्ग को घोर मानसिक क्लेश और सामाजिक परिवेश की यातनाओं से गुजरना पड़ता है।

मध्यवर्ग के लोगों में एक क्रांति की ज्वाला दिखाई देती है। इसके बारे में डॉ. त्रिभुवन सिंह लिखते हैं- ''मध्य वर्ग के लोग जागरूक, वर्तमान स्थितियों से परिचित तथा समस्याओं के मूल कारण को जानने की शक्ति रखते हैं, जिससे उनके अंदर एक ज्वाला जलती रहती है और वही ज्वाला उन्हें सामाजिक क्रांति करने की प्रेरणा प्रदान करती है।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि मध्यवर्गीय लोग जागरूक होते हैं। सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में मध्यवर्गीय पात्रों का यथार्थ चित्रण किया है। वह इस प्रकार है-

सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास में समाज में स्थित मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। कमला मध्य वर्ग का प्रतिनिधिक पात्र है। वह आंतरिक मन से त्रस्त है। वह प्रेमी रामू से विवाह नहीं करती। क्योंकि वह अपनी परिवार की मर्यादाओं तथा परिस्थितियों के

---

1. डॉ. विजयप्रकाश मिश्र - हिंदी के प्रतिनिधि कवि, पृ. 305
2. डॉ. त्रिभुवन सिंह - हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद, पृ. 261

15512

15512

कारण त्रस्त रहती है। जब रामू विवाह के दिन कमला को मिलता है तब वह अपनी असमर्थता के बारे में रामू को संबोधित करती है- ''मैं जो कुछ होना चाहती थी मुझे नहीं होने दिया गया। आज भी मैं जीना चाहती हूँ। अपने साथ किए गए अन्याय के प्रतिकार के लिए।''[1] अतः मध्यवर्गीय पात्र कमला जीवन में संघर्ष करना चाहती है, परंतु सामाजिक बंधन को वह तोड़ नहीं सकती है।

सर्वेश्वर जी ने 'सोया हुआ जल' उपन्यास में मध्यवर्गों का यथार्थ रूपों में चित्रण किया है। मोहन मध्यवर्ग का प्रतिनिधिक पात्र है। इनकी पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं है। इस कारण इसे आर्थिक अभावों का बार-बार सामना करना पड़ता है। वह चित्रों के पोस्टर द्वारा अपनी जीविका चलाता है। जिस समय प्रेमिका विभा शादी का प्रस्ताव रखती है, उस समय मोहन विभा को संबोधित करता हुआ कहता है- ''मेरे साथ ? जिसके घर-द्वारा, माँ-बाप, भाई-बहन कहीं कोई नहीं है जो अनाथ है ? जो महज तूलिका चलाना जानता है और उल्टे-सीधे चित्र बनाकर जिंदगी गुजारता है, उसके साथ तुम रहोगी ? मैं इस लायक नहीं हूँ कि तुम्हें अपने साथ रख सकूँ। नहीं, तुम मेरे साथ सुख से नहीं रह सकोगी।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि मोहन अपनी बदतर हालत के कारण अपने आपको शादी करने के लायक भी नहीं समझता।

अतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में मध्यवर्गों का यथार्थ चित्रण किया है। विवेच्य उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की पीड़ा, आर्थिक अभाव तथा सामाजिक मर्यादा आदि का यथार्थ रूपन में चित्रण दिखाई देता है, जो आज भी समाज में बड़ी मात्रा में परिलक्षित है।

3.4.3 निम्नवर्गीय समाज का यथार्थ चित्रण -

आर्थिकता के कारण जिस प्रकार उच्च वर्ग, मध्य वर्ग की निर्मिति हुई उसी प्रकार निम्न वर्ग की भी निर्मिति हुई है। जिसमें किसान, मजदूर तथा पीड़ित लोग आते हैं। आर्थिक विपन्नता के कारण इस वर्ग के लोगों को दो वक्त की रोजी-रोटी तक प्राप्त नहीं होती। इस रोजी-

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 84
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 16

रोटी को पाने के लिए उन्हें मजदूरी करनी पड़ती है। इनका उच्च वर्ग के लोगों द्वारा शोषण होता है। सर्वेश्वरजी ने निम्नवर्गीय समाज की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। इसके बारे में केशवदेव शर्मा की मान्यता है कि ''इस वर्ग के अंतर्गत ऐसे लोग आते हैं जिनका अपना संपूर्ण जीवनकाल उच्च वर्ग के लोगों की सेवा में ही व्यतीत हो जाता है। ये जीवन भर अपने भरण-पोषण के लिए उच्च वर्ग अथवा कुछ सीमा तक मध्य वर्ग के संपर्क में ही रहता है।''[1] सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में समाज के निम्न वर्ग का यथार्थ चित्रण किया है। वह इस प्रकार है -

'सूने चौखटे' उपन्यास में सर्वेश्वर जी ने निम्नवर्ग का चित्रण किया है। विवेच्य उपन्यास में एक ऐसे वर्ग का चित्रण मिलता है, जो समाज से अछूत रहा है। उनके रहन-सहन, पारिवारिक स्थिति तथा परिवेश का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। 'सूने चौखटे' उपन्यास के निम्नवर्गीय पात्रों में से खुन्नू मेहतर, अंधी नानी तथा लाला बालेदीन आदि प्रतिनिधिक पात्र हैं। इनकी पारिवारिक परिस्थिति अत्यंत दयनीय है। इनके परिवेश के बारे में सर्वेश्वरजी लिखते हैं- ''साँझ के बाद यहाँ रोशनी कम होती थी। मच्छरों को भगाने के लिए सुलगते हुए कूड़े का धुआँ इतना घना होता था कि आपको आरपार कहीं कुछ दिखाई नहीं दे सकता था। यूँ बाँस की झुरमुटों में जुगनू अपनी लालटेनें जला लेते थे। इक्के-दूक्के खपरैल के नीचे मिट्टी के तेल की ढिबरियाँ भी कभी-कभी जलती थीं, लेकिन वहाँ इंसान हैं, इसकी सूचना आप इस प्रकाश से नहीं, उस शोर से पा सकते थे जो वहाँ होता था।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सर्वेश्वरजी ने निम्न वर्ग की परिवेशगत स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कृत 'सोया हुआ जल' उपन्यास में निम्नवर्ग का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास में सर्वेश्वर जी ने निम्नवर्ग का प्रतिनिधिक पात्र के रूप में बूढ़ा पहरेदार का चित्रण किया है। उसकी पीड़ादायी स्थिति, आचार-विचार, रहन-सहन तथा

---

1. केशवदेव शर्मा - आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग संघर्ष, पृ. 36
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 7

वेश-भूषा आदि का विवेचन किया है। उसके बारे में सर्वेश्वरजी लिखते हैं, ''बूढ़ा पहरेदार का बरामदे की बेंच पर, फटे हुए बरानकोट को लाठी परे टिका, नाल-जड़े पुराने जूतों को नीचे खिसका, सिर घुटनों में छिपाकर गुड़ी-मुड़ी होकर बैठ जाना।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि निम्नवर्गीय पात्र बूढ़ा पहरेदार अपनी पीड़ादायी जिंदगी गुजारता है।

अतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास में खुन्नू मेहतर, अंधी नानी तथा लाला बालेदीन आदि निम्नवर्गीय पात्रों की पारिवारिक स्थिति, परिवेश तथा पीड़ा का यथार्थ चित्रण किया है। इसके साथ-साथ 'सोया हुआ जल' उपन्यास में निम्नवर्गीय बूढ़ा पहरेदार की पीड़ादायी जिंदगी का यथार्थ चित्रण सर्वेश्वरजी ने किया है। स्वतंत्र्योत्तर काल में भी निम्न वर्ग की पीड़ा, दुख, दर्द आज बड़ी मात्रा में स्पष्ट होती हैं।

3.4.4 सामाजिक भेदभाव का यथार्थ चित्रण -

प्राचीन काल से लेकर आज तक भी समाज में भेद-भाव जैसे घिनौनी पद्धति दिखाई देती है। जिसमें उच्च वर्ग - निम्न वर्ग में चल रहे भेदभाव का चित्रण मिलता है। डॉ. प्रकाश शंकर चिकुर्डेकर के अनुसार, ''भारतीय समाज-जीवन में परंपरा से जाँति-पाँति का भयंकर विष फैला हुआ नजर आता है। लोगों की रग-रग में यह व्याप्त है, जिसका प्रभाव पग-पग पर देखा जा सकता है।''[2] समाज में प्रचलित वर्ग-भेद को सर्वेश्वर जी ने सिर्फ देखा ही नहीं, तो उसे साहित्य के द्वारा यथार्थ रूपों में प्रस्तुत किया है। अतः कहना आवश्यक होगा कि स्वतंत्रता के पश्चात भी भेदभाव तथा छुआ-छूत की पद्धतियाँ स्पष्ट रूप से आज भी दिखाई देती हैं। सर्वेश्वरजी के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में सामाजिक भेद-भाव का यथार्थ चित्रण किया है। वह इस प्रकार है-

'सूने चौखटे' उपन्यास में भेद-भाव का चित्रण दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास में रामू की माँ निम्नवर्गों के प्रति भेदभाव रखती है। जिस समय रामू मेहतरों की गली में सैर करता

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 9
2. डॉ. प्रकाश शंकर चिकुर्डेकर - रामदरश मिश्र के उपन्यासों में समाज जीवन, पृ. 247

है, इस बीच वह खुन्नू मेहतर का ढोल बजाता है। इससे वह बहुत खुश होता है और वापस घर में आते ही माँ को खुन्नू मेहतर के ढोल बजाने का रहस्य बताता है। इस समय रामू की माँ उसे प्रोत्साहन देने के बजाय उसे चेतावनी देती है और कहती है- ''भविष्य में उनका बाहर निकलना बंद कर दिया जाएगा, यदि वे उस मेहतरोंवाली गली में गए या उन्होंने खुन्नू की ढोल बजाई।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू की माँ भेद-भाव को माननेवाली नारी है।

निम्नवर्गीय खुन्नू एक उच्चवर्गीय खत्री की बेटी से प्यार करता है, परंतु खत्री की बेटी प्रेमी खुन्नू का साथ नहीं देती है। क्योंकि खुन्नू मेहतर होने के कारण खत्री की बेटी अपने बिरादरी से शादी करती है। अतः खत्री की बेटी द्वारा भेदभाव का चित्रण सर्वेश्वरजी ने किया है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी सर्वेश्वरजी ने भेदभाव का यथार्थ चित्रण किया है। विवेच्य उपन्यास में पूँजीपति वर्ग की रतना मध्यवर्गीय किशोर से प्यार करती है। इस कारण रतना प्रेमी किशोर के लिए कुछ भी कष्ट उठाने के लिए तैयार होती है, परंतु किशोर अपनी आर्थिक अभाव की स्थिति के कारण रतना को बार-बार टोकता है। इस बारे में किशोर रतना को संबोधित करता हुआ कहता है, ''बड़े बाप की बेटी हो। इतना कष्ट उठा सकना तुम्हारे बूते के बाहर है।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि किशोर रत्ना को पूँजीपति की लड़की कहकर बार-बार उसे ठेंस पहुँचाता रहता है।

विवेच्य उपन्यास में तारवाले द्वारा निम्नवर्गीय बूढ़े पहरेदार को भेदभाव का सामना करना पड़ता है। जिस समय तारवाला तार लेकर आता है और प्रकाश बाबू के बारे में पहरेदार को पूछता है, उस समय पहरेदार प्रकाश का पता बताने से इन्कार कर देता है। इस कारण तारवाला पहरेदार को संबोधित करता हुआ कहता है, ''फिर पहरेदारी क्या करते हो ? बूढ़े साले, अफीम के नशे में पड़े मरते रहते हैं। खुदा ऐसों की भी रोजी सलामत रक्खे हुए है।''[3] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि तारवाले द्वारा निम्नवर्गीय पहरेदार को हरकतें सुनना पड़ता है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 19
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 13
3. वही, पृ. 37

अतः सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास में खुन्नू मेहतर तथा रामू की माँ के द्वारा भेदभाव का यथार्थ चित्रण किया है। इसके साथ-साथ 'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी किशोर तथा तारवाले के द्वारा सामाजिक भेदभाव का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है।

3.4.5 सामाजिक रीति-रिवाजों का यथार्थ चित्रण -

भारतीय समाज में विभिन्न जातियों, भाषाओं, समुदायों तथा रीति-रिवाजों आदि का प्रचलन होता है। इस कारण यहाँ धार्मिक विभिन्नता के साथ-साथ तीज, त्यौहार पर्व तथा उत्सव आदि में भी विभिन्नता दिखाई देती है। इस प्रकार हिंदी उपन्यास साहित्य में तत्कालीन भारतीय समाज का यथार्थ रूप में चित्रण दिखाई देता है, जिसमें समाज के रीति-रिवाज, खान-पान, वेश-भूषा, उत्सव, पर्व, त्यौहार, ब्राह्मण पूजा, पितर पूजा, पिंडदान, कन्यादान, विवाह, संस्कार, जन्म संस्कार आदि का विवेचन-विश्लेषण दिखाई देता है। सर्वेश्वर जी ने समाज के रीति-रिवाजों को सिर्फ देखा ही नहीं तो इसे साहित्य के द्वारा प्रस्तुत किया है। जिसे 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' में रीति-रिवाजों को विवाह संस्कार के समय प्रस्तुत किया है। वह इस प्रकार है-

'सूने चौखटे' उपन्यास में सर्वेश्वरजी ने सामाजिक रीति-रिवाजों का यथार्थ चित्रण किया है। विवेच्य उपन्यास में कमला के विवाह की तैयारी शुरू होती है। इस बीच सभी रीति-रिवाजों का आचरण किया जाता है। इस बारे में कमला मास्टरनी हेम दीदी को संबोधित करती हुई कहती है- ''वह शुभ दिन निकट आ रहा है, जिसकी लड़कियाँ प्रतीक्षा करती हैं। हाथ पीले होनेवाले हैं... इतनी प्रसन्न हूँ मैं कि मैने अपना सारा शरीर पीलाकर लिया है। मन, आत्मा, प्राण सब पीले हैं। पतझर की इस पीली बगिया की बहार देखने क्या तुम आओगी हेम दीदी ? जरूर आना, शायद इस पीलेपन में तुम्हें कोई विराट रूप दिखाई दे जाए।''[1] उक्त कथन से कहना होगा कि रचनाकार ने कमला के विवाह के रस्मो-रिवाजों का यथार्थ चित्रण किया है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में किशोर और रतना के विवाह में रीति-रिवाजों का खुलकर चित्रण दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास में किशोर और रतना अचेतन मन के द्वारा

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 75

विवाह करते हैं। इस बारे में सर्वेश्वरजी लिखते हैं, ''विवाह-मंडप में रतना वधू-सी सजाकर लायी गई है। झीने अवगुंठन में उसका मुस्कराता हुआ मुख-मंडल दमक रहा है। भाँवरों के पहले गाँठे बाँधी जा रही है। लेकिन गाँठ बार-बार खुल जाती है। सब लोग हैरान हैं, परेशान हैं। किशोर हँस रहा है। फिर बिना गाँठ बाँधे हुए भी भाँवरें पड़ती हैं। चारों ओर से गाती हुई स्त्रियों की भीड़ मंडप के समीप बढ़ती चली आती है। विवाहमंत्रों का उच्चारण हो रहा है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रतना और किशोर के विवाह में सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन किया जाता है।

अतः कहना होगा कि सर्वेश्वर जो ने विवेच्य उपन्यासों में सामाजिक रीति-रिवाजों का बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया है। इसमें विवाह के समय की मंत्र उच्चारण, वेश-भूषा, भाँवरों में गाँठे बांधना तथा गीत गाना आदि रीति-रिवाजों का चित्रण दिखाई देता है, जो प्राचीन काल से प्रचलित परंपराओं का उदाहरण है। वह आज भी सभी वर्गों में कम-अधिक मात्रा में दिखाई देता है।

3.4.6 समाज व्यवस्था का यथार्थ चित्रण -

स्वतंत्रता के बाद से आज तक समाज में पूँजीपतियों का राज चलता आ रहा है। वह समाज के निम्नवर्गीय लोगों पर अधिकार जताता है। इनकी वृत्ति भ्रष्टाचारी, झूठी बड़प्पनता तथा राजनीति की खोखली वृत्ति आदि में दिखाई देती है। वे राजनीति के प्रमुख अस्त्र से समाज पर राज करते रहे हैं। सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में जनक्रांति के नेता की स्वार्थी वृत्ति तथा उच्चवर्गों के प्रति निम्नवर्गीय की खोखली दृष्टि का चित्रण मार्मिकता से किया है। सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यास में समाज व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया हुआ दिखाई देता है।

'सूने चौखटे' उपन्यास में रामू अपनी आर्थिक विवशता का सामना करता हुआ पढ़ाई करता है। इस समय कमला रामू को लेखक बनने को कहती है। वह मानती है कि लेखक जैसा चाहे समाज को बना सकता है। इस बारे में रामू कमला को संबोधित करता हुआ कहता है,

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 29

''गलत सुनती है तू, समाज जैसा चाहे लेखक को बना सकता है। लेखक समाज को नहीं बदल सकता। समाज को बदलती है राजनीति।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सर्वेश्वर जी ने समाज व्यवस्था के गहरे रूप को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

सर्वेश्वरजी ने 'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी व्यवस्था का चित्रण किया है। विवेच्य उपन्यासों में रतना प्रेमी किशोर के साथ घर से भाग आती है। इस बीच वह अपने साथ हजार-बारह सौ के गहने लेकर आती है। वह किशोर से जी-जान से प्यार करती है। परंतु किशोर अपने भाई को यात्रीशाला में देखकर बहुत घबरा जाता है। उस समय रतना अपने बाबूजी के स्वभाव की दूहाई देती हुई उसे वापस चलने को कहती है। इस संबंध में किशोर रतना को संबोधित करता हुआ कहता है, ''अपने बाबूजी की तुम लाड़ली बेटी हो। वह तुम्हें दुलार-चुमकार कर फिर रख लेंगे। समाज में भी कोई ऊँगली उठाने की हिम्मत नहीं कर सकेगा। लोग यही समझ-समझा लेंगे कि लड़की अपनी किसी सहेली से मिलने गई थी। पैसा समाज के नियमों पर हुकूमत करता है। लेकिन हम तो गरीब हैं- हमें तो....।''[2] उक्त कथन से कहना सही होगा कि सर्वेश्वरजी ने समाज व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। अतः सर्वेश्वरजी ने विवेच्य उपन्यासों में समाज व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है।

° 3.4.7 नये-पुराने विचारों का यथार्थ चित्रण -

आज भी समाज में दो विचारधाराएँ दिखाई देती हैं। जिसमें पहला- पुराने विचारों का जो प्राचीन काल से प्रचलित आ रहे रीति-रिवाज, रूढ़ि परंपराओं का पालन करता है, तो दूसरा नये विचारों का वर्ग जो आधुनिक विचारों से वैज्ञानिक दृष्टि रखता है। सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में नये-पुराने विचारों का यथार्थ चित्रण किया है। वह इस प्रकार से है-

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 52
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 23

'सूने चौखटे' उपन्यास में नये-पुराने विचारों का वर्ग दृष्टिगोचर होता है। उपन्यास में कमला की मास्टरनी नये विचारों की हिमायती करनेवाली नारी है। वह शिक्षित होने के कारण नौकरी करने का फैसला करती है, परंतु मास्टरनी हेम दीदी के ससुरालवाले पुराने विचारों के समर्थक हैं। वे हेम दीदी को संबोधित करते हुए कहते हैं, ''उनके परिवार में ऐसा कभी नहीं हुआ कि औरतें नौकरी करें। जो रूखा-सूखा है, बहुत है। हमें पैसों का भी लालच नहीं है। औरत कमाए यह आदमी के लिए डूब मरने की बात है। दुनिया क्या कहेगी ?''[1] उक्त कथन से कहना सही होगा कि हेम दीदी के ससुरालवाले पुराने विचारों के हिमायती हैं।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में राजेश पुराने परंपराओं को मानता है। वह भाई किशोर के प्रेम विवाह को विरोध करता है। इस बारे में राजेश किशोर को संबोधित करता हुआ कहता है कि ''रतना से विवाह करने का अर्थ है किशोर का मेरा संबंध विच्छेद।''[2] उक्त कथन से राजेश पुराने विचारों का दिखाई देता है। किशोर शिक्षित युवा पात्र है। वह आधुनिक विचारों का समर्थक होने के कारण पूँजीपति वर्ग की रतना के साथ घर से भाग जाता है।

अतः सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में नये-पुराने विचारों के संघर्ष को प्रस्तुत किया है, जो समाज में नये और पुराने दो वर्गों में आज भी दिखाई देती है।

3.4.8 दमित वासनाओं का यथार्थ चित्रण -

प्राचीन काल से शहरों तथा गाँवों में दमित वासनाओं का प्रचलन होता आ रहा है। समाज के उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग में पारिवारिक असमर्थता के कारण दमित वासनाओं का निर्माण होता है। समाज की पीड़ित निम्नवर्गीय नारी अपनी आर्थिक समस्याओं के कारण उच्चवर्गीय की दमित वासनाओं का शिकार होती है। डॉ. जयश्री शिंदे की मान्यता है कि, ''स्वप्न के द्वारा व्यक्ति अपनी दमित-भावनाओं को व्यक्त करके मानसिक स्वास्थ्य लाभ करता है क्योंकि काम-

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 47
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 30

संबंधी भावनाएँ दमित होकर अचेतन में चली जाती हैं।''[1] महानगरीय जीवन की नारी में तृष्णा, कुंठा तथा घुटन आदि का रूप दिखाई देता है। इसे सर्वेश्वरजी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में दिखाया है। वह इस प्रकार से है-

'सूने चौखटे' उपन्यास की कमला मानसिक रूप से त्रस्त है। वह बचपन के साथी रामू को यौवन अवस्था में चाहने लगती है। इस कारण वह रामू के प्रति आकर्षित भी होती है। वह रामू से प्यार करती है, परंतु उससे वह शादी नहीं कर सकती। क्योंकि कमला अपनी मर्यादाओं का पालन करती है। इनके मन में रामू के प्रति विचारों से दमित वासनाओं का अजायब घर निर्माण होता है।

सर्वेश्वरजी के 'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी दमित वासनाओं का चित्रण दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यास के राजेश, विभा, किशोर, रतना, दिनेश आदि पात्र दमित वासनाओं से लिप्त हैं। सर्वेश्वरजी ने इनकी भीतरी कुंठा, तृष्णा तथा घुटन का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यास के पात्र एक-दूसरे को अपूर्ण समझकर अपनी इच्छा पूर्ति को अचेतन मन के द्वारा पूरा करते हैं। विवेच्य उपन्यास में विभा और राजेश शादी-शुदा दांपत्य हैं। वह चेतन मन से एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं, परंतु अचेतन मन में वे पुराने प्रेमी-प्रेमिकाओं से संबंध रखना चाहते हैं। इस प्रकार विभा विवाह के उपरांत भी पुराने प्रेमी मोहन से संबंध रखना चाहती है। इस बारे में डॉ. धनराज मानधाने लिखते हैं, ''विभा का अचेतन गरीब मोहन को विवाहोपरांत भी इतना चाहता है कि उसके साथ एक नई जिंदगी गुजारना चाहता है, क्योंकि मोहन से सशरीर तृप्ति न पाने पर भी उसने वह तृप्ति पाई है जिसके सम्मुख उसके पति द्वारा प्राप्त शारीरिक तृप्ति फीकी है।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि विभा अपनी दमित इच्छा की पूर्ति अचेतन मन के द्वारा प्राप्त करना चाहती है। इसके साथ-साथ दिनेश भी अपनी दमित इच्छा की पूर्ति रतना से करना चाहता है।

---

1. डॉ. जयश्री शिंदे - मनोविज्ञान के कटघरे में हिंदी कहानी, पृ. 22
2. डॉ. धनराज मानधाने - हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृ. 243

विभा का पति राजेश भी स्वप्न में एक गोरी लड़की के साथ संबंध रखता है, तो किशोर प्रेमिका रतना से ज्यादा भाभी विभा के प्रति भी आकृष्ट होता है।

अतः सर्वेश्वर जी ने समाज में स्थित दमित वासनाओं का चित्रण विवेच्य उपन्यासों के पात्रों द्वारा स्पष्ट किया है।

निष्कर्ष -

1. सर्वेश्वरजी ने विवेच्य उपन्यासों द्वारा समाज की भीतरी स्थिति को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।
2. विवेच्य उपन्यासों द्वारा समाज की वर्ग व्यवस्था का चित्रण इंगित होता है।
3. विवेच्य उपन्यासों द्वारा समाज के रीति-रिवाज, भेद-भाव, समाज व्यवस्था तथा दमित वासनाओं का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है।
4. समाज के नये-पुराने विचारों का यथार्थ चित्रण किया है।
5. समाज में पनपती घृणा, तृष्णा तथा कुंठा आदि का यथार्थ चित्रण मिलता है।
6. जनक्रांति की दूहाई देनेवाले नेता की भीतरी स्वार्थी वृत्ति का प्रकाश के माध्यम से व्यंग्य किया है।
7. समाज के निम्नवर्गीय लोगों को पूँजीपतियों के विरोध में चेतना जगाने का विवेच्य उपन्यासों द्वारा प्रयास दिखाई देता है।